श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

सा विद्या या विमुक्तये — श्री शत्रुंजय-मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

Answer Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ जनवरी - 2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर   8   शहर ____________

विद्यार्थी का नाम ____________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	न्याय
(२)	आत्मरमणता
(३)	विशाल
(४)	सत्कथाओं
(५)	वासिष्ठ
(६)	अजिन सिद्ध
(७)	गुरु
(८)	अंगुल
(९)	धर्मभ्रष्ट
(१०)	सचित-अचित
(११)	अधिक
(१२)	पुण्य
(१३)	शुद्धि
(१४)	कर्म
(१५)	नामकर्म
(१६)	रत्न
(१७)	कंठ
(१८)	सर्प
(१९)	देवलोक
(२०)	द्वादशा

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	भोजनकथा
(२)	अन्यलिंग
(३)	त्याग
(४)	सुपक्ष
(५)	गुणानुरागी
(६)	तप
(७)	जमाली
(८)	अठ्ठाई
(९)	राग
(१०)	अंतर्मुहूर्त
(११)	रोहिणी
(१२)	गुरुबुद्धि
(१३)	परलोक
(१४)	चमरेन्द्र
(१५)	स्थिति

(५)	अनुक्रम से
(६)	संग्रह
(७)	युक्त
(८)	रसत्याग
(९)	गोत्र
(१०)	मुक्त
(११)	विनय
(१२)	राजकथा
(१३)	योनि
(१४)	मैं
(१५)	कुम्भार
(१६)	साधु
(१७)	पात्रो को
(१८)	तप
(१९)	ललाट से
(२०)	आठ

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	सूक्ष्म
(२)	वासित
(३)	पंद्रह
(४)	रत्नप्रभा

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	9
(२)	6	(७)	2
(३)	7	(८)	10
(४)	8	(९)	1
(५)	3	(१०)	5

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	6
(२)	33
(३)	4
(४)	2
(५)	14
(६)	36
(७)	56
(८)	15
(९)	28
(१०)	18

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	17
(२)	✓	(२)	23
(३)	×	(३)	8
(४)	✓	(४)	4
(५)	×	(५)	14
(६)	✓	(६)	21
(७)	✓	(७)	18
(८)	×	(८)	5
(९)	✓	(९)	2
(१०)	×	(१०)	6

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

१. कर्म पुद्गल के शुभ-अशुभ रस का तीव्रमंदपना वह रसबंध है। मोदक मे मिठास होने से सामन्यतः मोदक मीठे ही कहलाते है। फिर भी हर एक मोदक की मिठास मे तरतमता होती है। मेथी के मोदक कडवे होते है, उसकी कडवास भी कम ज्यादा होती है। उसी तरह आत्मा के साथ जुडते शुभ अशुभ कर्म के रस मे तरतमता होती है। कर्मबंध के समय रस मे मंदता, तीव्रता, तीव्रतरता, तीव्रतमता देखने मिलती है, उसे रसबंध कहा जाता है।

२. राजकथा ४ विकथा मे से एक प्रकार है :- हमारा राजा शत्रु से लडने मे समर्थ नही, उस राजा का तो मरना ही चाहिए, उसे राजा की जीत होनी चाहिए दोनो राजाओं का युद्ध हुआ, अच्छा हुआ, उस राजा के तो ऐसे ही हाल होना चाहिए। इस राजा को तो राज चलाते ही नही आता, इसे क्या राजा कहें, ये राजा दुष्ट है, जल्द मर जाए तो अच्छा, यह राजा अच्छा है अतः लंबे समय तक राज करे तो अच्छा ऐसा सब कहना, बोलना राजकथा है।

३. गुरु ढामापना याने अब्भुट्ठिओ भी कहते है। जो कुछ अप्रीतीभाव या विशेष अप्रितिभाव उपाध्याय हो, भोजन संबंधी, पानी संबंधी, विनयसंबंधी, गुरुसेवा संबंधी, एक बार बोलने संबंधी, बारबार बोलने संबंधी, गुरु से ऊँचे आसन पर बैठने संबंधी, गुरु से समान आसन पर बैठने संबंधी, गुरु बोलते हो तब उनके बीच मे बोलने संबंधी, कही हुई बात को विशेषरूप से कहने संबंधी जो कुछ मेरे से विनयहीनता कम या ज्यादा हुई हो वह आप जानते हो मै नही जानता, उन संबंधी मेरा दुष्कृत्य मिथ्या हो। इस सूत्र से गुरु के प्रति हुए अविनय अपराध की क्षमापना ली जाती है इसके पश्चात खमासणा देकर पच्चखाण लेकर सुखशाता पूछते है।

४. निम्न ६ अतिशय है जो वार्षिक दान मे प्रस्थापित होते है। सौधर्मेन्द्र, तीर्थंकर के हाथ मे स्थिति करता है, इशानेन्द्र सुवर्ण छडी हाथ मे रखकर देवों का दान लेते हुए अटकता है, मनुष्य के ललाट मे जितना हो उतना ही वह माँगे ऐसी प्रवृति रखता है; चमरेन्द्र खड़ा रहकर तीर्थंकर के हाथ मे कम या ज्यादा सोनामोहोर न आए ऐसी व्यवस्था करता है। भवनपति देव अन्य क्षेत्रके मनुष्यो को दान लेकर आते है, वाणव्यंतर देव उन मनुष्यों को उनके क्षेत्र मे वापिस छोड़ आते है। ज्योतिषि देव विद्याधारों को दान लेने के समाचार देते है।

५. नारकी के जीवों की ऊँचाई धनुष्य के नाप से नापी जाती है। पाँचसौ धनुष्य की ऊँचाईवाले नारक जीव सातवी नरकपृथ्वी के जानना उससे आधी आधी ऊँचाई कम प्रमाण वाले नारक जीवों की रत्नप्रभा पृथ्वी तक जानना। सबसे अधिक ऊँचाई सातवी नरक के जीवों की है, जो पाँचसौ धनुष्य है। फिर जैसे जैसे उपर जाए वैसे वैसे ऊँचाई आधी आधी होती जाती है। जैसे सातवी नरक के जीवों की ऊँचाई पाससौ तो छठवी नरक के जीवो की ढाईसौ, पाँचवी नरक के जीवो की ऊचाई - सवासौ धनुष्य, चौथी नरक के जीवो की ऊचाई - ६२ धनुष्य, तीसरी की ३१ धनुष्य दूसरी की - १५ धनुष्य ६ पहले नरक के जीवो की ७ धनुष्य होती है।